[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3630

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

समाज पर रंगों का प्रभाव

Neetu Yadav (NET)
Research Scholar
D.E.I. Agra
E-mail- neetuyadav0208@gmail.com

संसार की प्रत्येक वस्तु की एक बनावट होती है जिसका एक रूप और रंग होता है, जो उनकी पहचान को महत्व प्रदान करता है, किसी भी वस्तु को उसके रूप, आकार व रंग से पहचाना जा सकता है, यदि वस्तु में केवल आकार हो तो वह नीरस दिखाई देती है। चित्र के समस्त तत्वों में सबसे अधिक संवेगात्मक तत्व वर्ण होता है। वर्ण एक प्रकार की लहर के समान होता है, जो वस्तु को जीवन प्रदान करता है।

रंग प्रकाष की किरणों का एक गुण है जिसका अनुभव हम अपने नेत्रों के माध्यम से करते हैं। किसी वस्तु के वास्तविक स्वरूप को हम रंगों के द्वारा ही प्रदर्षित कर सकते हैं। जिससे कि देखने वाले व्यक्ति पर उसका प्रभाव पड़े ।रंग वस्तु को ही नहीं बल्कि भावनाओं को समझने का भी एक साधन है। **यषोधर पण्डित** द्वारा रचित **जयमंगलम्** के अन्तर्गत **चित्र षडंग** में रंग का प्रमुख स्थान है क्योंकि वर्ण ज्ञान के आभाव में चित्र **षडंग** की पाँच साधनायें व्यर्थ हैं।

रूपभेदाः प्रमाणानि भावलावण्योजनम्।
सदृष्यं वर्णिका भंगः इति चित्र षडंगकम्।।

वर्ण प्रविधि का ज्ञान चित्र को स्थायी बनाने में सहयोग देता है, वर्ण प्रभाव के आधार पर चित्रों को सौन्दर्य प्रधान बनाया जा सकता है। मानव जीवन में रंगों का विषेष स्थान है क्योंकि रंग जीवन का सार हैं। जिस प्रकार से संगीत के लिये लय, काव्य के लिये रस की आवष्यकता होती है ठीक उसी प्रकार से चित्र के लिये वर्ण आवष्यक है। रेखा यदि चित्र का आधार है तो उसे पूर्णता रंग के सहारे मिलती है रंग के माध्यम से ही पृथक–पृथक वस्तुओं में रूपों की विभिन्नता दर्षायी जा सकती है। इसके द्वारा ही हम वस्तु के स्वभाव वातावरण तथा अर्थ का ज्ञान होता है। मुख्य वर्ण तीन माने गये हैं– लाल, पीला, नीला जो पूर्णतया शुद्ध और इनका अस्तित्व है। **विष्णुधर्मोत्तर पुराण** में मुख्य मुख्य पाँच रंग माने गये हैं– लाल, पीला, नीला, सफेद, काला तथा इसी पुराण के दूसरे स्थान पर पीला, नीला, सफेद, काला व हरा मुख्य माना गया है। **षिल्प रत्न** में सफेद, लाल, पीला, श्याम, सफेद, काला रंग। प्रत्येक रंग का वस्तु पर अपना प्रभाव होता है। जैसे कि हमारे हिन्दू समाज में लाल रंग को शुभ का प्रतीक माना गया है। इसके द्वारा प्रेम, क्रोध, कामुकता, उत्तेजना प्रसन्नता, उल्लास आदि अनेकों भावों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। शुभ व मांगलिक कार्य विवाह आदि अवसरों पर लाल रंग का प्रयोग विषेष रूप से होता है जैसे कि लाल रोली, सिन्दूर, महावर, गेरू, वस्त्र आदि हिन्दू देवी–देवताओं के वस्त्रों को भी अधिकतर लाल रंग के होते हैं। नवविवाहित स्त्री श्रृंगार भी लाल रंग द्वारा किया जाता है जो प्रेम व प्रसन्नता का प्रभाव उत्पन्न करते हैं। इसका ऐसा स्वरूप हमको महान महिला कलाकार अमृता शेरगिल की कृति **वधू** में दिखाई देता है जिसमें सम्पूर्ण श्रृंगार व पहनावा लाल रंग का है क्योंकि लाल रंग स्त्री की पवित्रता व सुहाग का प्रतीक माना जाता है जो कि समाज पर अपना विषेष रूप से प्रभाव डालते हैं। मांगलिक कार्यों में भी लाल रंगों का प्रमुखता से प्रयोग होता है। घर की दीवारों पर लाल रंग गेरूवे से बने मांगलिक प्रतीक चिन्ह स्वास्तिक, कमल, हाथी, कलष आदि को उकेरा जाता है। इसके अतिरिक्त लाल रंग के माध्यम से क्रोध, श्य, युद्ध, को शी दर्षया जाता है। दुर्गा, काली आदि देवियों में लाल नेत्रों में क्रोध का प्रभाव परिलक्षित होता है। युद्ध–भूमि में लाल रक्त, श्य के कारण लाल चेहरा आदि बातें लाल रंगों का प्रभाव प्रदर्षित करती हैं। रौद्र तथा वीर रस का सम्बन्ध लाल रंग से होता है।

चित्र सं. 1 वधू, अमृता शेरगिल, ऑयल ऑन कैनवास, 70x98सेमी.

अमर हम बात करें पीले रंग की तो समाज पर इसका प्रभाव प्रसन्नता, गर्व, प्रकाष के रूप में पड़ता है क्योंकि पीले वर्ण के माध्यम से प्रकाष, ओज, तेज के भाव को दर्षाया जाता है जैसे कि देवी–देवताओं का प्रभामण्डल जिसमें तेज, यष, प्रखरता दिखाई देती है। ऐसे ही उनके पीत वर्ण के वस्त्र जिसमें सात्विकता व पवित्रता का प्रभाव होता है क्योंकि पीले रंग को अद्भुत रस के प्रतीक के स्वरूप माना जाता है। शुभ व मांगलिक कार्यों की पूर्ति हेतु पीले रंग का प्रयोग **वैदिक काल** से होता आ रहा है। यज्ञ कार्य पूर्ण करने हेतु पीले वस्त्र धारण करके यज्ञ कार्य सम्पन्न करना, साथ–साथ विवाह संस्कार में हल्दी जो कि मंगल पदार्थ के रूप में मान्य है वर–वधू के शरीर पर इसका लेपन किया जाता है। इस प्रकार यह कहना उचित होगा कि पीला रंग

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

का महत्व पारम्परिक रूप से होता है। बसन्त–ऋतु में चारों ओर पीले रंग के पुष्प और ज्ञान की देवी माँ सरस्वती का पूजन भी पीले रंगों की सामग्री से सम्पन्न किया जाता है। इसके साथ कलाकार भी अपनी कृति में प्रफुल्लता व प्रसन्नता को दर्षाने के लिये पीले रंग का प्रयोग करते हैं। जिसका प्रभाव दर्षक के मन पर सीधे पड़ सके।

चित्र सं. 2 बैठे हुये गणेष, राजस्थान मिनिएचर, 19वीं शताब्दी

नीला रंग यानी श्याम वर्ण जो भगवान पुरुषोत्तम राम तथा योगेष्वर कृष्ण का प्रतीक माना जाता है। विषपान करने के कारण भगवान षिव को भी ''नील कण्ठ'' कहा जाता है। नीला रंग शीतलता, सत्यता, राजस्व के प्रतीक रंगों के रूप में होता है, क्योंकि यह रंग शीतल रंगों की श्रेणी में आता है। श्रृंगार रस का योग श्याम वर्ण से है। आकाष व समुद्र की कल्पना हम नीले रंग द्वारा ही कर सकते हैं। ऐसा ही प्रभाव आधुनिक महान कलाकार **एस.एच. रज़ा** की कृति **जल बिन्दु** में देखने को मिलता है। **रज़ा** मुख्य रूप से अपनी कृतियों में पंच तत्वों– धरती, नभ, अग्नि, वायु व जल को प्रतीकात्मक रूप में निर्मित करते हैं। प्रत्येक तत्व का एक निष्चित रूप, रंग होता है। इस कृति में जल को नीले रंग के माध्यम से प्रदर्षित किया है। केन्द्र में बना बिन्दु आकाष का प्रतीक है। जिससे शीतलता का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

इसी प्रकार प्रकार हरा रंग जो कि प्रजनन, विकास का स्वरूप है। भारतीय ध्वज में इसका प्रयोग विकास व समृद्धि के भाव से है। जिसमें मनोहरता, सुरक्षा का भाव होता है। प्रकृति का तो स्वरूप ही हरा–भरा मनोहर है। इसी प्रकार से मुस्लिम समाज में भी हरे रंग को पवित्र माना जाता है क्योंकि यह त्याग व बलिदान का प्रतीक है। इसाई धर्म में यह आषा, अमरत्व, ध्यान एवम् पुर्नजन्म के प्रतीक रूप में प्रयुक्त होता है। आधुनिक कलाकार **तैयब मेहता** ने अपनी कृतियों में रंगों का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप से करते हैं। उन्होंने अपनी कृति **काली का सिर** में काली की शान्त मुद्रा दर्षाने के लिये हरे रंग का प्रयोग किया है।

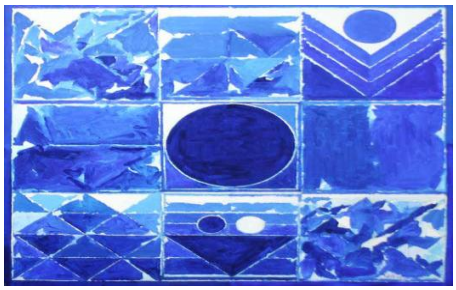

चित्र सं. 3 जल बिन्दु, एस.एच.रज़ा, एक्रिलिक ऑन कैनवास, 80x80सेमी, 2005

ऐसे ही अनेकों रंग जैसे– नारंगी जो कि ज्ञान, प्रेरणा तथा वीरता का प्रतीक होता है, जो व्यक्ति व समाज को अपने प्रभाव से प्रभावित करता है। इसे केसरिया रंग भी कहा जाता है, जो कि बलिदान का प्रतीक माना जाता है, भारतीय ध्वज में भी इसका प्रयोग इसी भाव से है। सफेद रंग– शान्ति, स्वच्छता, एकता को प्रकट करता है। भारतीय ध्वज में भी इसका प्रयोग शान्ति भाव से है। काला रंग– बुराई, अन्धकार, भय, निराषा को प्रकट करता है। प्रत्येक रंग समाज पर किसी न किसी रूप में समाज को प्रभावित करते हैं, जिनका हमारी भावनाओं से सम्बन्ध होता है क्योंकि रंगों के प्रति मनुष्य का आकर्षण कभी घटता नहीं। इसी कारण तो आदिम गुहावासियों से लेकर आधुनिक मानव ने सौन्दर्य के विकास के लिये रंगों को माध्यम बनाता चला आ रहा है क्योंकि रूप में सजीवता की कल्पना रंगों के द्वारा ही सम्भव होती है। यह मनुष्य की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। चरित्र की अनेक गूढ़ बातों को रंग के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है, कलाकृति में भावों के अनुसार ही रंगों का प्रयोग करके प्रभावषाली बनाया जा सकता है हर कलाकार को विभिन्न रंगों के प्रभाव का ज्ञान होना अनिवार्य है क्योंकि रंग योजना करने से कलाकृति प्रभावषाली एवं उच्चकोटि की होती है। जिससे कि समाज पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ सके। समाज की प्रत्येक वस्तु व पदार्थों की पहचान हमारे रंग के द्वारा ही करते हैं, क्योंकि रंग का प्रभाव सीधे मस्तिष्क पर पड़ता है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1 *Tuli, Neville : Indian Contemporary Painting, Mapin Publication Pvt. Ltd., 1997.*
2 *तिवारी, रघुनन्दन प्रसाद : भारतीय चित्रकला के मूल तत्व,1975।*
3 *पाण्डेय, संध्या : भारतीय कला पुर्नजागरण एवं चित्रकार, मध्य प्रदेष पाण्डेय, आर. पी. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।*
4 *बाजपेई, राजेन्द्र : सौन्दर्य, तृतीय संस्करण, मध्य प्रदेष हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2004।*
5 *सक्सेना, रणवीर : आकार कल्पना, रेखा प्रकाषन, देहरादून, 1958।*
6 *शर्मा, एस. के.,अग्रवाल आर. ए. : रूपप्रद कला के मूलाधार, इन्टरनेषनल पब्लिषिंग हाउस, 1995–96।*
7 *क्षोत्रिय, शुकदेव : चित्रकला के मूलाधार, चित्रायन प्रकाषन, मुजफ्फर नगर, प्रथम संस्करण, 2002*